BCM SCHOO BASANT AVENUE LDH.(2.9.24)
Assignment 3
class X Hindi M.M-15

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दें:-(5)
बहुत कठिन है भले-बुरे का, भेद आज कर पाना।
सहज-बोध के गंतव्यों का, दुर्लभ हुआ सुझाना।
विध कैसे लक्ष्य मिलेगा।सबके मन में ललक बलवती,
कब तक जन मानस विवेक ऊपर उठ पाने की।
को, यों ही सहज छलेगा।।किंतु बढ़ी है भूख और भी.
ऐसे संभव नहीं धरा पर, सहज बोध का वर्षण।
तड़पेगी पल-पल मानवता, हो न सकेगा तर्पण।।
बैर-भाव को त्याग सभी बढ़, सृजन पंथ अपनाएँ।
सब कुछ खा जाने की।।व्यक्ति दौड़ में फिसल रहे,
गिरा दूसरों को राहों में, बढ़ो दौड़ मंजिल की।
रही न किंचित चाह किसी को, साथी की संबल की।।
जो, उनको विहँस उठाएँ।।स्वार्थ सिद्धि ही साध्य सभी
(क) काव्यांश के अनुसार, मानव के द्वारा अपना ही स्वार्थ साधने का कारण है
1. भले-बुरे का भेद मुश्किल से कर पाना।
2. दूसरों को गिराकर आगे बढ़ने की चाह करना।
3. हमेशा सब कुछ प्राप्त करने की भूख रखना।
4. बैर-भाव का त्याग करते हुए आगे बढ़ना।
कूट
(i) केवल 2 सही है
(ii) केवल 3 सही है
(iii) 2 और 3 सही है
(iv) 1.2, 3 और 4 सही है
(ख) आज के युग में किसकी पहचान करना कठिन है?
(i) मंजिल की पहचान करना
(ii) लक्ष्य की पहचान करना
(iii) राह की पहचान करना
(iv) सज्जन-दुर्जन की पहचान करना
(ग) गिरा दूसरों को राहों में, बढ़ो दौड़ मंजिल की' पंक्ति का क्या आशय है?
(i) दूसरों को साथ लेकर आगे बढ़ना
(ii) दूसरों के मार्ग में अवरोध उत्पन्न कर स्वयं आगे बढ़ना
(iii) दूसरों से मनमुटाव छोड़ आगे बढ़ना
(iv) दूसरों के प्रति दया भाव रखना
(घ) आज के युग की विशेषता नहीं है
(i) दूसरों के हित साधने की चिंता करना
(ii) भले-बुरे की पहचान नहीं करना
(iii) दूसरों के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करना
(iv) अपने स्वार्थ का त्याग करना
(ङ) कथन (A) मनुष्य को मनमुटाव की छोड़ देना चाहिए।
कारण (R) मनुष्य को मिल जुलकर निर्माण के मार्ग को अपनाना चाहिए।
(i) कमनA गलत है, किन्तु कारण R सही है
(ii) कचन A और कारम R चोनों ही गलत है
(iii) कथन A में सही है और कारण R कथन A की सही व्याख्या है
(iv) कथन A सही है, किन्तु कारणR कथनA की सही व्याख्या नहीं है
निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से चार पंक्तियों में दें:-2×5=10
1.नेताजी जी का चश्मा' पाठ में शासन तंत्र की कार्य प्रणाली पर जो व्यंग्य किया गया है। उसे अपने शब्दों में लिखिए।
2.बालगोबिन भगत का अपने खेत की पैदावार को कबीरपंथी मठ पर जाकर चढ़ा देना क्या प्रकट करता है? पाठ 'बालगोबिन भगत' के आधार पर उत्तर दीजिए।
3.एक कहानी यह भी पाठ के आधार पर लेखिका की माँ के स्वभाव को स्पष्ट कीजिए। 4.लखनवी अंदाज' पाठ के आधार पर बताइए कि नवाब साहब का व्यवहार किस वर्ग पर व्यंग्य करता है?
5. पर्यावरण को संरक्षित करना मनुष्य का नैतिक कर्तव्य है। इसे संरक्षित करने में आपकी क्या भूमिका हो सकती है? 'साना-साना हाथ जोड़ि पाठ को दृष्टि में रखते हुए उत्तर लिखिए।

उत्तरमाला
क. केवल दो और तीन सही
ख. सज्जन दुर्जन की पहचान करना
ग. दूसरों के मार्ग में अवरोध उत्पन्न कर स्वयं आगे बढ़ना
घ. दूसरों के हित साधने की चिंता करना
ङ कथन A में सही है और कारण R कथन A की सही व्याख्या है

1.'नेताजी का धरना' पाठ में लेखक ने नगरपालिका की कार्यपद्धति पर व्यंग्य किया है कि नगरपालिका का बहुत सारा समय असमंजस में तथा चिट्ठी-पत्री जैसी औपचारिकताओं में नष्ट हो जाता है, जिसके कारण कार्य होने में विलंब हो जाता है। अंत में जल्दबाज़ी में कार्य ठीक ढंग से भी नहीं किया जाता। तात्पर्य यह है कि नगरपालिकाको कार्यपद्धति में औपचारिकता तथा दिखावे को ही अधिक महत्त्व दिय जाता है।

2. 'बालगोबिन भगत' के खेतों में जो पैदावार होती थी, वे उसे कबीरपंथी मठ में भेंट के रूप में चढ़ा देते थे। वहाँ से जो कुछ प्रसाद के रूप में मिलता था, उसी से अपने और अपने परिवार का गुजारा करते थे। इससे यह प्रकट होता है कि वह कबीर के भक्त थे और उन्हीं को अपना साहब मानते थे, उनका आदर करते थे तथा अपनी सभी वस्तुओं पर उनका अधिकार समझते थे।

3. लेखिका की माँ का स्वभाव अपने पति जैसा नही था। वे एक अनपढ़ महिला थी। वे अपने पति के क्रोध को चुपचाप सहते हुए स्वयं को घर के कामों में व्यस्त किए रहती थी। अनपढ़ होने पर भी लेखिका की माँ धरती से भी अधिक धैर्य और सहनशीलता वाली थी। उन्होंने अपने पति के सभी अत्याचारों को भाग्य समझा। उन्होंने परिवार में किसी से कुछ न माँगा बल्कि दिया ही दिया है।
4.'लखनवी अंदाज' के पात्र नवाब साहब का व्यवहार पतनशील सामंती वर्ग और उसकी बनावटी जीवन-शैली पर व्यंग्य करता है। नवाब बनावटी जीवन-शैली अपनाने में विश्वास करते हैं और इसी में अपना पूरा जीवन बिता देते हैं। उन्हें जीवन के यथार्थ और कड़वी सच्चाइयों से कोई सरोकार नहीं होता। नवाब साहब वास्तविकता से बेखबर कृत्रिम जीवन जीने में विश्वास करते हैं तथा सामान्य जीवन से कोसों दूर रहते हुए स्वयं को विशिष्ट श्रेणी का सदस्य मानते हैं।
5.पर्यावरण को संरक्षित करना हमारा नैतिक कर्त्तव्य है। हम इस कार्य में निम्न प्रकार से अपना योगदान दे सकते हैं ।
(i)अपने शहर को हरा-भरा तथा को स्वच्छ रखने में सरकार का सहयोग करना चाहिए।
(ii) सभी प्रकार के प्रदूषणों को रोकने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर प्रयास करना चाहिए: जैसे-सार्वजनिक परिवहन प्रणाली का प्रयोग करना, नदियों में कूड़ा न फेंकना आदि।
iii) समय-समय पर पर्यावरण संरक्षण के अभियान चलाकर अपने आस-पास के लोगों को जागरूक करना होगा।
(iv) ग्लेशियर के संरक्षण के लिए अधिक ऊंचाई वाले पहाड़ों पर पर्यटन कम करना चाहिए।